International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 41-46

मैत्रेयी पुष्पा के रचना संसार (उपन्यासों) में स्त्री विमर्श

मोनिता नेमा
शोध छात्रा (हिंदी साहित्य), बरकतउल्लाह वि. वि., भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता"

"अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं" यदि ईश्वर प्रकाश पुंज है**,** तो नारी उसकी किरण, जो प्रकाश को चारों ओर बिखेर देती है यदि ईश्वर शब्द है तो नारी उसका अर्थ।"

नारी पुरुष एक दूसरे के पूरक है एक के बिना दूसरे का अभीष्ट प्राप्त नहीं हो सकता। हिंदू आदर्श के अनुसार पत्नी को अर्धांगिनी कहा गया है। वह लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा एवं काली आदि रूपों में धन, विद्या, शांति तथा शक्ति का प्रतीक मानी गई है । नारी को ममतामई, करुणामई, वात्सल्यमई जैसे अनेक अलंकरणों से विभूषित किया गया है। प्रथम ज्ञात नारी एवं पुरुष क्रमशः हव्वा एवं आदम जाति के युग से ही नारी पुरुष के साथ सहधर्मिणी, सहचारिणी का जीवन - यापन करती आई है, हमारे सामाजिक जीवन की जो संरचना एवं व्यवस्था स्थापित की गई है उसके स्त्री एवं पुरुष दो ध्रुव माने गए हैं। दोनों ही रथ के दो पहियों के समय कार्य करते हैं दोनों के मिलन से ही जीव की संरचना संभव है। दोनों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है किंतु इसके बावजूद भी नारी का पूर्णरूपेण शोषण समाज ने अपनी सुविधा के लिए किया तथा नारी को कभी भी उचित महत्त्व नहीं दिया। जिस स्त्री को हम देवी स्वरूप मानते हैं, शक्ति स्वरूपणी कहा गया है, उसी स्त्री को निर्बल समझकर सहनशील बना दिया जाता है।

आदि अनादि काल से ही स्त्री का शोषण किसी ना किसी रूप में किया जाता रहा है। हमें अपने धार्मिक ग्रंथों में भी इसका वर्णन मिलता है त्रेता युग में सीता जी को अपना सतीत्व सिद्ध करने के लिए प्रथमत: अग्नि परीक्षा तत्पश्चात पति की न्यायप्रियता निभाने के लिए वन गमन करना पढ़ता है। द्वापर युग में मां के निर्णय का पालन करने हेतु द्रोपदी को पंच पतियों को स्वीकार करना पड़ा, पति के द्वारा अपनी पत्नी द्रौपदी को धूतक्रीडा मैं दांव पर लगाया जाना साथ ही दुर्योधन द्वारा द्रोपदी को भरी सभा में अपमानित करना एवं दु: शासन द्वारा द्रोपदी का चीर हरण करना । इसी प्रकार सतयुग में राजा हरिश्चंद्र की सत्यमित्ता को निभाने के लिए उनकी पत्नी को पहले अपनी संतान तथा बाद में स्वयं का बलिदान करना इस बात को प्रमाणित करता है कि आदि- अनादि काल से किसी ना किसी रूप में स्त्री का शोषण होता रहा है। जो कि वर्तमान में भी जारी है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में नारी का स्थान अग्रणीय रहा है किंतु यह भी सच है कि विभिन्न काल खंडों में भारतीय नारी की स्थिति समय अनुसार परिवर्तनीय रही है

यह अक्षरश: सत्य है की वर्तमान समाज में स्त्रियां समग्र क्षेत्र में असुरक्षित हैं। मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार - "ऐसा एक भी समाज नहीं है जहां स्त्रियां सुरक्षित हो या उन्हें पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा प्राप्त हो, असुरक्षा उनका पीछा, पालने से लेकर कब्र तक करती है।"१

मानवीय संवेदना के जनक प्रेमचंद एक स्थान पर लिखते हैं - "यदि पुरुष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह साधु हो जाता है और यदि किसी स्त्री में पुरुष के गुण आ जाए तो वह कुलटा हो जाती है।" अर्थात स्त्री के गुण मात्र ग्रहण कर लेने से पुरुष सज्जन हो जाता है।

प्रागैतिहासिक काल में सभ्यता का विकास न होने से स्त्री की दशा अत्यंत चिंतनीय थी। स्त्री -पुरुष के अधीन थी, वह उसकी अनुगामिनी बनने को विवश थी यौन - स्वच्छंदता का वातावरण था। किसी प्रकार का कोई बंधन स्त्री - पुरुष के बीच नहीं था। स्त्री -पुरुष की वीरता के आगे नतमस्तक थी इस काल में - "जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला सिद्धांत लागू था। इस समय मानव एवं पशु में कोई अंतर नहीं था। दोनों ही के लिए जीते थे। इस काल में स्त्रियों की दशा के संबंध में कोई ऐसा उज्जवल बिंदु नहीं दिखता है जिसके आलोक से नारी अलौकिक हो सके।"२

ऋग्वेद काल में स्त्रियों की दशा के संदर्भ में मनु ने लिखा है - "वैदिक युग में महिलाएं देवी के रूप में पूजी जाती थी।"३ इस युग में नारी पूजनीय थी उसकी समाज में महत्वपूर्ण स्थिति थी। वह सभी क्षेत्रों में पुरुष के समकक्ष मानी जाती थी। स्वयंबर की प्रथा थी, विधवा - विवाह एवं पर्दा प्रथा की परंपरा नहीं थी। स्त्री की अनुपस्थिति में धार्मिक कार्य पूर्ण नहीं माने जाते थे संपत्ति पर स्त्री का समान अधिकार था। स्त्रियां शास्त्रार्थ करती थी। उस युग की सुप्रसिद्ध महिला गार्गी, धर्म स्त्री थी। इसके अतिरिक्त घोषा, विश्वतारा, अपाला भी श्रेष्ठ प्रतिभाशाली स्त्रियां थी। इस युग में स्त्री -पुरुष की सह - गामिनी के रूप में सामने आई।

उत्तर वैदिक काल में भारतीय स्त्रियों की दशा - "मैत्रायण संहिता" के अनुसार स्त्रियां विपदा एवं आपत्ति की जन्मदाता है।"४ की वैदिक काल के अंत तथा उत्तर वैदिक काल के प्रारंभ में स्त्रियों की प्रतिष्ठा पर आंच आनी शुरू हो गई। पुत्री जन्म को अपशगुन माना जाने लगा आर्थिक स्वतंत्रता से उन्हें उन्हें वंचित कर दिया गया। सभाओं में प्रवेश निषेध था। बाल - विवाह, बहु -पत्नी, का प्रचलन बढ़ गया था। ऐतरेय उपनिषद'के अनुसार स्त्रियों को शूद्र से भी नीचा दर्जा दिया गया। मौर्य काल में शिक्षा से वंचित हो गई। उन्हें बंधन में रखा जाने लगा गुप्तकाल

में स्त्रियों की उन्नति के विषय में विशेष ध्यान नहीं दिया गया | देव - दासी प्रथा का प्रचलन बढ़ गया था |

मध्ययुग में मुगलों ने आक्रमण कर भारतीय गौरव का नष्ट करने का प्रयास किया स्त्रियों के लिए हर क्षेत्र वर्जित कर दिया गया | उसके समस्त अधिकार छिन गए | बाल विवाह की अधिकता के कारण स्त्रियां शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ती गई | पुत्री जन्म को हेय की दृष्टि से देखा जाने लगा | कई जातियों में पुत्री को जन्म लेते ही मार दिया जाता था | बेमेल विवाह के कारण विधवाओं की संख्या में वृद्धि हुई | इस युग में विधवा - विवाह पूरी तरह बंद हो गए | सती - प्रथा अपने चरमोत्कर्ष पर थी |११ -वीं शताब्दी प्रसिद्ध इतिहासकार अलबरूनी अनुसार - 'एक स्त्री दूसरी बार विवाह नहीं कर सकती, विधवा या तो तपस्विनी का जीवन व्यतीत करती है या अग्नि में जल जाती है |"५ इस युग में कुछ स्त्रियों ने राजनीति के क्षेत्र में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया जैसे - नूरजहां, जहांआरा, कर्णावती, मीराबाई, चांदबीबी, रोशनआरा, रजिया सुल्तान, पद्मिनी आदि श्रेष्ठ शासक के रूप में इतिहास में अपना नाम दर्ज करने वाली करने स्त्रिया है किंतु ऐसी स्त्रियां सीमित है | इस युग में स्त्री पतन के साथ ही समाज का पतन भी प्रारंभ हुआ |

मुगलों के पतन एवं स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व के बीच का जो समय है वह आधुनिक युग के नाम से जाना जाता है | इस युग में दयानंद सरस्वती, राम मोहन राय, एनी बेसेंट जैसे अनेक समाज सुधारकों ने स्त्रियों की दयनीय दशा पर विचार किया साथ ही नारी की प्रगति के लिए कार्य किया | कानूनी रूप से सती - प्रथा को समाप्त किया गया | बाल -विवाह एवं बेमेल विवाह होती रहे | पुरुष वर्ग में स्त्रियों को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान नहीं की पुरुष ही सभी निर्णय लेता था |

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार प्रदान किए गए, स्त्रियों की शिक्षा को महत्व दिया जाने लगा, शिक्षित समाज ने मनुष्य के मूल्यों, विचारों एवं मनोवृत्तियों को प्रभावित किया, परिवार संबंधी मान्यताएं परिवर्तित होने लगी | स्त्रियों को परिवार मैं समान अधिकार दिए जाने लगे | शिक्षित स्त्रियां घर एवं बाहर की जिम्मेदारियों का कुशलता से निर्वहन करने लगी | स्त्रियां नर्सिंग, डॉक्टरी, शिक्षण कार्य, स्टेनो टाइपिंग आदि पेशो में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर आत्मनिर्भर हुई तथा वे आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र हुई परिणाम स्वरुप उनके सामाजिक स्तर में सुधार हुआ |

साठोत्तर भारत के विकास मैं निरंतर बढ़ते सोपानों के बीच स्त्रियों की विडंबनाओं का सिलसिला थमा नहीं | बलात्कार, भ्रूण -हत्या, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियां अभी भी समाज में मुंह फाड़े खड़ी है | स्त्रियों के लिए स्थिति चिंतनीय एवं दयनीय है |

समाज के संपूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि स्त्री -पुरुष दोनों को समान अधिकार प्राप्त हो | इसके लिए नर -नारी में स्वभाविक समरसता भी जरूरी है | विगत कुछ वर्षों से स्त्रियों की दशा में अनेक परिवर्तन आए हैं | यह परिवर्तन कहीं तो सकारात्मक एवं सम्मानजनक है, तो कहीं यह नकारात्मक एवं असम्मानजनक भी | स्त्रियों में पुरुषों की तुलना में जीवन के प्रति अधिक जिजीविषा होती है | अपनी दृढ़ - इच्छा शक्ति के बल पर वर्तमान समाज की शिक्षित स्त्रियों ने अपने आप को विकास के नए मापदंडों पर खरा साबित किया है |

'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास स्त्री शोषण'

मैत्रेयी पुष्पा साठोत्तर हिंदी कथा साहित्य में उदीयमान होते हुए साहित्य के क्षितिज पर ध्रुव -तारे की तरह जगमगाई | उनकी लेखनी के प्रकाश में अन्य बहुत सी लेखनीयो का प्रकाश धूमिल जान पड़ता है | वे साठोत्तरी हिंदी की सशक्त महिला कथाकार के रूप में उभरी | उनका लेखन निश्चित ही बुंदेली अंचल के लिए सदैव अमिट दस्तावेज रहेगा | उनके लेखन में ग्रामीण अंचल की पृष्ठभूमियों पर रचित कथा साहित्य एवं उपन्यास भरपूर मात्रा में मिलते हैं | उनकी लेखनी का मूल आधार ग्रामीण अंचल एवं परिवेश है | उनका जन्म ग्रामीण क्षेत्र के मध्यम - वर्गीय परिवार में हुआ था अतः लेखनी में ग्रामीण अंचल की स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार और शोषण का बहुत ही अच्छा चित्रण मिलता है | मैत्रेयी के उपन्यासों में कोई पात्र नायिका का स्वरूप धारण करती हुई किस प्रकार स्त्री जागरण एवं सामाजिक चेतना के लिए कार्य करती है इसका बखूबी चित्रण उन्होंने अपनी लेखनी से किया है | मैत्रेयी स्त्री के विषय में क्या सोचती है वह आभा के द्वारा नेहा से कहलाती है, यह विजन उपन्यास में स्त्रीत्व की महान कवित्री महादेवी वर्मा स्पष्ट जीवन का कोई लक्ष्य साधने का अधिकार है न समाज द्वारा निर्धारित विधान के विरुद्ध कुछ कहने का वातावरण भी धीरे-धीरे उसे ऐसे ही मूक आज्ञापालन के लिए प्रस्तुत करता रहता है | शताब्दियों पर शताब्दियां बीती चली जा रही हैं, समय की लहरों में परिवर्तन बहते आ रहे हैं लेकिन समाज केवल स्त्री को, जिसे उसने दासता के अतिरिक्त और कुछ देना नहीं सीखा, प्रलय की कुभल - पुभल मैं भी शिला के सामान स्थिर देखना चाहता है | ऐसी स्थिरता मृत्यु का श्रृंगार हो सकती है, जीवन का नहीं बकौल, बकलम ग्रेट पोइटैस महादेवी वर्मा |"६

मैत्रेयी य समझती है कि कही गई बात को व्यवहार में लाना बहुत कठिन हैं | कथनी और करनी में वही अंतर है जो कलम की धार और तलवार की धार में है | विजन उपन्यास में एक स्थान पर मैत्रेयी स्त्री को ही स्त्री के शोषण का कारण मानती है, अगर एक स्त्री, दूसरी स्त्री के साथ हो रहे अत्याचार के विरुद्ध खड़ी हो हो उठे तो है पुरुष वर्ग का स्त्री के प्रति शोषण समाज में बिल्कुल समाप्त हो जाएगा | लेकिन स्त्री ऐसा नहीं करती | अपने निजी स्वार्थ या ईर्ष्या की वजह से एक स्त्री, दूसरी स्त्री को या तो स्वयं यातनाएं देती है या पुरुष समाज के द्वारा उसे शोषित करवाती है | इस प्रक्रिया में वह यह भूल जाती है कि वह स्वयं भी एक नारी है |

मैत्रेयी पुष्पा का लेखन स्त्री केंद्रित है | उन्होंने स्त्रियों की समस्याओं का स्त्री पात्रों द्वारा पूर्ण मनोयोग से चित्रण किया है उनकी समस्याओं का प्रस्तुतीकरण तथा उनका पूर्णरूपेण समाधान स्त्री पात्र से ही करवाना, उनकी लेखनी का सफलतम प्रयास है | मैत्रेयी के वर्णित उपन्यासों में स्त्री स्वयं के लिए स्वतंत्रता के आयाम निर्धारित करती है, वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए दृढ़ता से समाज का सामना करने हेतु सदैव तत्पर रहती है | यही उनकी लेखनी का मूलमंत्र है | मैत्रेयी य पुष्पा ने

अपने उपन्यासों में स्त्री की शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला है, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं - पति का पत्नी पर संदेह करना, पति के अन्य स्त्रियों से संबंध, पुरुषों का दुर्व्यसन में लिप्त होना, संयुक्त परिवारों में सामंजस्य का आभाव, प्राचीन एवं नवीन पीढ़ियों के बीच वैचारिक मतभेद, विधवा स्त्री, परित्यक्ता स्त्री, हीन भावना से ग्रसित होना, स्त्री का मान बन पाना, अशिक्षा, स्त्रियों का आत्मनिर्भर ना होना इत्यादि ऐसे अनेक कारण समाज एवं परिवार में व्याप्त है, जिसके कारण स्त्री शारीरिक एवं मानसिक रूप से शोषित होती है।

पुरुष द्वारा स्त्री पर हाथ उठाया जाना स्त्रियों से चला आ रहा है। पति अपनी पत्नी को जागीर समझता है चाहे मारे कूटे पर वह उसे छोड़कर नहीं जाएगी। झूला नट उपन्यास में भी नारी के शारीरिक शोषण के उदाहरण मिलते हैं - "सुमिरन बहू को पीट रहा था। अम्मा गली से जा रही थी, बहू मिमियाती बकरी -सी छूटकर भागी पति के हाथों से और अम्मा से लिपट गई -बचा लो काफी। सुमिरन दोनों हाथ भांजता आ गया गली में अम्मा को ऐसे देखा, जयो चबा जाएगा। उमर में बड़ी अम्मा से कहे क्या? बस इतना बोला, "हमारी बीच में न पड़ो काफी।" 'मैं कहता हूं। छोड़ दो इस रंडी को। सुमिरन का गुस्सा फुसकारते नाग जैसे अम्मा की बाहों से बहू को खींच लिया,' चल साली'।"७

आधुनिक नारी में स्पष्टवादिता स्वयं निर्णय लेने तथा समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाने की लालसा जागृत हुई है। 'विजन" कि नेहा को जब उसके ससुर ऑपरेशन नहीं करने देते तथा नर्सिंग - होम की देख -रेख में लगा देते हैं तब अपनी योग्यता का अनादर होते देख अपनी बे - कद्री से आहत होकर उसका सब्र टूट जाता है और वह अपने बूढ़े ससुर के बारे में सोचती है - "बूढ़े सर्जन कब के रिटायर हो गए। यहां तक कि निजी नर्सिंग होम चलाने वाले भी उन्हें मरीजों को हाथ नहीं लगाने देते| डॉक्टर शरण यहां पुराने चावल बने हुए हैं। देहली में होते तो तुम्हें कोई आंख छूने देता, सिवा किसी बूढ़े के।"८

अल्मा कस्तूरी उपन्यास में मैत्रेयी कहती है कि एक स्त्री के आंसू को एक स्त्री ही पहचान सकती है, उसकी भावनाएं, उसके दुख तकलीफ से वही परिचित हो सकती हैं। जब राणा अलमा को छोड़कर कदम बाई के पास आ जाती है, और बताता है कि अलमा दुखी रहती है। तब इतनी दूर बैठी कदम बाई अलमा के दुख मर्म समझने की कोशिश करती है-------- "मर्द किसी औरत के रोने का मतलब नहीं समझ सकते। उनके रहते औरत का रोना कुत्ते की रोटी उठा ले जाने पर रोने जैसा होता है। तभी तो राणा उसे छोड़ आया, वह भी तो मर्द ही है, मेरा बेटा है तो क्या।" ९और जब राम सिंह अपनी पुत्री अलमा को अपने मित्र दुर्जन कबूतर के घर दातार नगर छोड़ देता है तभी से अलमा के बुरे दिन शुरू हो जाते हैं। अपने मित्र राणा को अपनी दुर्दशा की कहानी पत्र के माध्यम से व्यक्त करती हैं। वह बताती हैं कि किस तरह उसके बप्पा के मित्र दुर्जन सिंह ने उसे धोखा दिया "अल्मा तू गिरवी धरी है, समझे रहना भला। इसमें बुराई भी नहीं। हम कबूतरों में तो यह चलन रहा है - "जेवर -महना, बासन और बेटी मुसीबत के समय काम आते है। अब तू मेरी खरीदी हुई|"१० कुछ आदमी आए थे राणा, मुझे डर लग रहा है। बप्पा कहां है? कौन बताए? दुर्जन दाती पीसकर कहता है - "नखरे करे तो साली।"११

सदियों से स्त्री पुरुषों के द्वारा उतनी शोषित नहीं हुई जितनी प्रताड़ना एक स्त्री ने दूसरी स्त्री को दी हो। कुछ मायनों में एक पुरुष किसी स्त्री की शह पाकर ही दूसरी स्त्री को प्रताड़ित करने की हिम्मत कर पाता है। एक औरत अपने पति के द्वारा मारपीट सहते हुए भी उसके गुण में, कमी नहीं रखती। इसका उदाहरण मैत्रेयी ने अपने उपन्यास "कहीं ईसुरी फाग" में दिया है। बाई अपने स्वर्गीय पति के गुण गाती है - "ओ पिरताप के दादा, तुम ने जनम -जनम सुरग मिले। अपुन ६ महीना अन बोला तो बांधे रहे, अकेले हमारी जिंदगानी बखसे रहे। बस ईतके - सा तसिया की सोच - सोच के जिंदा रहे अपना ही आदमी तो है, जिसका बोझ हम हथेरी पर सहे या करीहाई पर। जनी बच्चा का बोझ भी तो गर्भ में सहती है। जिंदगानी बोझ - वजन के ही हवाले रहनी हैं, तो आदत डारो।"१२ "कहीं इसरी फाग" उपन्यास में सांकेतिक रूप से स्त्रियों के शोषण की उस दशा को भी उठाया है जब देश के रक्षक सिपाहियों के लिए देश की स्त्रियों की खरीद -फ़रोख्त होती थी। बसारी वाली बऊ ऋतु को बताती है - "बिन्नू जनी तो ले जब कोई जात हती न अब है जब गांव की तमाम जनी सिपाहियों के लिए जाती थी उनकी जात गांव में ही धरी रह जाती है। जहां औरतों की खरीद –फ़रोख्त हो रही है, वहां आदमी पूजा धर्म निभाकर अपने जात - गोत्र की चादर जनी को उड़ा देता है।"१३ जब रज्जो अपने जेठ रामदास को बछिया के लिए मना कर देती है तब वह रज्जो को लात,घूंसों एवं थप्पड़ों से बहुत मारता है - "दारी हड्डी चुरन कर देंगे हम। नाइन के घर बैठ के दिखा रही है की वे कितनी नीच हो सकती है। ऐ ? --------हमारी देहरी बैठ के इतेक रंडीपना कर पाएगी ते। सो बस छुट्टा गाय की तरह फिर न चाह रही है।"१४

वर्तमान समाज में हम लड़कियों का उच्च शिक्षा देने के बावजूद भी लोगों को यही सिखाते हुए पाते हैं कि लड़की को मर्यादा में रहना चाहिए। लड़कियों को समाज में दोयम दर्जा हासिल है इस का भी चित्रण मैत्रेयी य ने "अगन पाखी "उपन्यास में किया है - "भट्टी घोत, बाप भैया नहीं तो तू ऐसी मनु जीमार भई जा रही है कि मर्द डरे जनी के लच्छिन कब सीखेगी।"१५

मैत्रेयी य के उपन्यास "कस्तूरी कुंडल बसे" में कस्तूरी के मायके वाले जब जमीदार का लगान अदा नहीं कर पाते तब वह उसे हीरालाल के हाथों ८०० सिक्कों में बेच देते है, तथा उसका विवाह हीरालाल के साथ कर दिया जाता है - "ओ, ८०० की घोड़ी, तू मुंह नहीं दिखाती, तेरी यह मजाल। हम तो सोच रहे थे नई छोरी की तरह शर्मा रही है, पर तू आजमा रही है। तेरे भैया ने खनखन आते चांदी के कलदार वसूले हैं, मुफ्त में नहीं आई सो नखरे पसार रही है।"१६ तत्पश्चात जिस दिन

उसके पुत्र का (कस्तूरी) स्वर्गवास होता है उसी दिन कस्तूरी देखती है, कि उसका पति, पर - स्त्री के साथ उसी घर में सहवासरत है, लेकिन वह मुंह बंद करके रह जाती है क्योंकि उस समय सामाजिक प्रथा के अनुसार स्त्री को विचारों की अभिव्यक्ति की आजादी नहीं थी।" जब वह विवाह योग्य लड़की थी और घरवालों ने उसे दो पीतल के कलशो की तरह ही बेच दिया था, कल हो बनिया को, कस्तूरी आदमी को। इसके बाद तब भी नहीं, जब मुंह दिखाई के समय उससे औरतों ने ८०० में खरीदी घोड़ी कहा था। उस दिन भी नहीं, जब २० दिन जीकर बेटा मर गया था और उसी रात को पति उसी घर में परस्त्री के संग संभोगरत देखे थे। तब ही नहीं, जब पति का स्वर्गवास हो गया और तब भी नहीं, जब भाई दिलासा देने की जगह लूट मचाने लगा। अतः इस प्रकार मैत्रेयी य ने बताया है कि किस प्रकार उनकी मां कस्तूरी का अपने ही सगे भाइयों द्वारा तथा तत्पश्चात अपने पति हीरालाल द्वारा मानसिक शोषण किया जाता है।

इसी प्रकार जब मैत्रेयी य की शिक्षा ग्रहण करने का समय आता है तब उसकी मां अपने ममता को परे रखकर मैत्रेयी य को समाज कल्याण बोर्ड की संयोजिका के घर पर छोड़ देती है। यह अलीगढ़ है, यही मैत्रेयी य के रहने - पढ़ने का प्रबंध हुआ है। समाज कल्याण बोर्ड की संयोजिका का घर। माताजी ने भी यही घर मैत्रेयी य की तरह पहली बार ही देखा है। लेकिन वहां जमीन में प्रथम बार नन्ही बालिका मैत्रेयी य को संयोजिका के छोटे बेटे के द्वारा यौन शोषण का शिकार होना पड़ता है। जिसका गहरा प्रभाव नन्हीं मैत्रेयी य के जीवन एवं लिखनी दोनों पर परिलक्षित होता है। मैत्रेयी य जब अपने पुश्तैनी घर में शरण लेती है, तब उनकी मां वहां आकर उन्हें पुरुष जाति से होशियार रहने की सलाह देती है। उसने लड़ने के लिए एवं उनसे सजग रहने के लिए प्रेरित करती है। यह बात गांठ में बांध ले कि मर्द की जात से होशियार रहकर चलना होता है, भले वह ६० साल का बूढ़ा हो। गांव वालों के समझाने पर भी मां की समझ में नहीं आता है किंतु जब खेरा पतिन दादी ने कहा तो मां को एहसास होता है। मैत्रेयी य के सिर पर हाथ धरकर बोली, "बचना कैसे होता है, यह सोचने की भी अवस्था होती है। तू तो पढ़ी लिखी है, कस्तूरी, इतना तो जानती होगी कि शेर का बच्चा भी कुछ दिन तक अपनी मां का लाया शिकार ही खाता है। बेटी, तेरी तरक्की ने तुझे ऐसा चकाचौंध कर डाला की सबसे सीस पर मुकुट देख रही है।

एक बूढ़े व्यक्ति द्वारा भी पुनः मैत्रेयी का योन शोषण करने का प्रयास किया जाता है तत्पश्चात कॉलेज में अधेड़ प्रधानाध्यापक द्वारा भी उनके योन शोषण का प्रयास किया जाता है जिसका भी मैत्रेयी निडरता से सामना करती है वह निश्चित करती है की इस अन्यायई पुरुष -प्रधान समाज से लड़ना ही होगा। लड़की ने ऐलान किया मुझे नहीं पढ़ना। करने दो रेस्टीगेशन बह न मैनेजमेंट कमेटी सामने बयान देने गई थी। मैं प्रिंसिपल से कभी अभिवादन किया। कक्षाएं चलती। मिट्टी के बुत सी लड़की, क्या पढ़ती क्या न पड़ती? अनेक अवसरों पर कस्तूरी कुंडल बसे में मैत्रेयी य ने स्वयं के साथ यौन शोषण के जो प्रयास हुए उनका बड़े ही निर्भीकता से वर्णन किया है।

मैत्रेयी के पति सिर्फ शंका के आधार पर उसको मानसिक प्रताड़ना देने लगते हैं। हद तो तब हो गई जब नव -विवाहित को बिना सूचना के अकेले छोड़कर अपनी छुट्टी कैंसिल करा कर ड्यूटी पर चले जाते हैं। तब शायद मैत्रेयी ने एकांकीपन की वह पीड़ा महसूस की हो, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, जिसको सिर्फ एक नारी की महसूस कर सकती है जो उन परिस्थितियों का सामना कर चुकी हो। मरी हुई मैत्रेयी य.. की आत्मा गांव पर मंडरा रही है माताजी। यहां ब्याह के चलते मिलन के शुभ मुहूर्त नहीं पत्नी का मन मारते रहना ही पति का अभीष्ट है।

मैत्रेयी के मां कस्तूरी न जाने किस भावना से प्रेरित है उसे कौनसा भय लगा रहता है कि वह घबराकर मैत्रेयी और उनके पति के बीच में खड़ी रहती है। बे यह नहीं समझ पाती है जब पति के साथ नहीं रहने देना था, उनके वैवाहिक जीवन को इस तरह बर्बाद करना था, तो उनकी शादी ही क्योंकि। लेकिन स्त्रियोचित संस्कार होने के कारण एक निश्चित सीमा से अधिक विरोध मैत्रेयी चाहकर भी नहीं कर पाती। लेकिन एक मूक विवशता एक मूक संघर्ष उनके अंतर्मन में चल रहा है, जिससे कि वह स्वयं के किसी के सामने नहीं कर पा रही है। जब मैत्रेयी य के मां बनने की खबर कस्तूरी को लगती है तो उनका बर्ताव बड़े ही विचित्र रूप से असंयमित हो जाता है तथा मैत्रेयी य की कोख में पलने वाले बच्चे को लेकर पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर शंका करने लगती है। मां तुम्हारी जुबान में सर्जिकल चाकू फिट है, मेरी आत्मा को नहीं, पेट के गर्भ को भी खुरचे डाल रहा है। मैं कीड़े -मकोड़े जानने वाली हूं वे एक दूसरे को खाने वाले हैं। क्या चाहती हो मां जो कहना चाहती हो आइंदा न कहना, मेरा मन कह रहा है कि तुम जैसी औरत ही अपने बच्चे को खा जाती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में भारतीय परिवारों की स्त्रियों पर हो रहे शोषण के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डाला है, भारतीय समाज में जो संयुक्त परिवार है उसमें प्रायःकोई ना कोई स्त्री शारीरिक एवं मानसिक रुप से शोषित की जाती है। इन स्त्रियों में जो अशिक्षित है वह तो इस अन्याय को अपना भाग्य मान बैठती हैं किंतु शिक्षित स्त्रियां अपने प्रति हो रहे अन्याय को सहन नहीं कर पाती और वे इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है। संयुक्त परिवारों में पति के साथ - साथ सास -ससुर, जेठ -जेठानी, देवर -ननंद आदि के द्वारा भी स्त्री शोषित होती है, जिसका वर्णन मैत्रेयी य ने अपने समस्त ११ उपन्यासों - स्मृति दंश, बेतवा बहती रही, इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्मा कबूतरी, अगन पाखी, विजन, कस्तूरी कुंडल बसे, कही ईसुरी फाग और गुड़िया भीतर गुड़िया उपन्यासों में किया है। संयुक्त परिवारों में जब स्त्रियां आत्मनिर्भर होकर धनार्जन करती एवं घर - बाहर के कार्यों को भी कुशलतापूर्वक निभाती हैं। ऐसी स्थिति में यदि स्त्री अपने परिवार के सदस्यों से घर की जिम्मेदारियों में सहयोग की अपेक्षा करती हैं तो उसे परंपरागत स्त्री के कर्तव्यों का समाप्त कर दिया जाता है तब वह शोषित होते हुए भी अकेले ही दोनों भूमिकाएं निभाती हैं। लेखिका ने विजन उपन्यास में आभा के द्वारा इस सच्चाई को उजागर किया है। आधुनिक युग में भारतीय समाज में एकल परिवारों का प्रचलन तीव्रता से जोर पकड़ रहा है इन परिवारों की स्त्री या पुरुष की माननीय सत्ता एवं पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं का विरोध करती है शिक्षित नारी को हर कदम पर पति की आज्ञा लेना, पति का संदेह करना एवं पति के इशारों पर चलना मंजूर नहीं है। परिणाम स्वरूप इन बातों का विरोध

करने पर परिवार में उसे अनेक तरह से शोषित एवं प्रताड़ित किया जाता है। पति अपने चारित्रिक पतन के कारण भी पत्नी को प्रताड़ित करता है। परिवार में कई बार पति अपनी पत्नी को बेचकर अथवा उसके शरीर का सौदा कर उस पर अत्याचार करता है एक पुरुष अपनी स्त्री के होते दूसरी शादी कर लेता है वह भी उस स्त्री के होते दूसरी शादी कर लेता है, वह भी उस स्त्री के होते हुए जिसे उसने स्वयं अपनी मर्जी से स्वीकार किया हो वह पत्नी को छोड़ने करण भी कितना मामूली सा - आपे से बाहर मत हो। ठंडे दिमाग से सोचो तुम्हारी ६ उंगलियां वाली कल्लू बहू मेरे दोस्त को रोटी परोसने आ जाती, तो वह कल के दिन मुझे बोलने न देता। काली - गोरी दो रंग--------- पर तुम्हारी बहू तो नीली है, बैंगनी। रंग के कारण किसी औरत का जीवन बर्बाद करना एक पुरुष के लिए सहज है। अम्मा सुमेरु को समझती है - "चल नाशपरे, तेरी जिंदगानी इतनी कच्ची निकली कि करिया गोरे रंग में ही डूबने लगी अरे सुमेरु, खुद को देख, नासपीटे तू कहां का चंदा है तू सिंगल दीप की पद्मिनी चाहिए।"१७

भारतीय सामाजिक परिवेश में एक परित्यक्ता नारी को अपराधी की दृष्टि से देखा जाता है यही कारण है कि झूलानट की नायिका शीलो को भी उसकी अम्मा और पुरा -पड़ोसी वाले नीची निगाह से देखते हैं यहां तक कि उसके मायके में भी उसकी उपेक्षा होती है। शीलो - बालकिशन से कहती है - लला बालकिशन, जनी की जिंदगी और अपने आदमी की आंखो से उतरी औरत। हे मेरे शंकर महादेव। दुश्मन की गति ना करना ऐसी मैं तो तुम्हारे भैया की लातों की धूल - पान समझकर माथे से लगाने को तैयार हूं। लेकिन इस घर में दर तो ताऊ।"१८

भारतीय समाज में पीढ़ीयो से चली आ रही यह कहावत आज भी चरितार्थ है कि पिता के घर से लड़की की डोली उठेगी और पति के घर से अर्थी बीच का कोई रास्ता नहीं। इस दृढ मानसिकता के कारण एक परित्यक्ता स्त्री की स्थिति न घर के न घाट की हो जाती है वह अपने सिर पर छत की तलाश के लिए दर-दर भटकती रहती है। उसे ससुराल और मायके दोनों ही पक्षों में तिरस्कार एवं अपमान का घूंट पीना पड़ता है' झूलानट उपन्यास में शीलो की स्थिति भी ऐसी ही है जब सुमेरु शीलो को छोड़कर चला जाता है और अम्मा शीलो को मायके भेजने की बात करती है तब शीलो अम्मा से विनती करती है - "अपने चरणों से अलग ना करना अम्मा इसमें पड़ी रहने दो, मैं खेत की घास बुरी घड़ी जन्मी, तुम्हारी चाकरनी बनकर रहूंगी। बालू की दुल्हन की टहल करूंगी। उनके बच्चे पालूंगी। रूखी - सूखी खाकर घड़ी काट लूंगी। मायके में क्या सवाल - जवाब नहीं होंगे। दिन रात की सूली"।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मैत्रेयी य के उपन्यासों में स्त्री पात्र विभिन्न कारणों से शोषण का शिकार होती है। नारी की विवशता, परिवार तथा पुरुष के अत्याचारों को मैत्रेयी जी ने अत्यंत ही हृदय स्पर्शी शब्दों के साथ भाव अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी नारी अस्तित्व बचाने के प्रयासों से जूझती हुई नारी है, वह हिंदुस्तानी संस्कारों में रची बसी नारी है, तथा कहीं-कहीं त्यागमय महत्वपूर्ण तथा वात्सल्य की प्रतिमूर्ति की मालकिन होती है।

स्त्री जागरण

जिस समाज व देश की नारी जितनी सुदृढ़, सक्रिय महत्वपूर्ण एवं सम्मानजनक होगी, वह देश व समाज उतना ही समृद्ध व उन्नत होगा। अगर हम इतिहास पर नजर डालें तो यह बात सत्य प्रतीत होती है जिस कालखंड में स्त्री को समाज में सम्मान व समानता प्रदान हुई वह कालखंड उन्नति के शिखर पर गया व जिस काल में स्त्री के साथ दुर्व्यवहार और शोषण हुआ वह कॉल अवनती व पतन के गर्त की ओर बड़ा। स्त्री सृजन करती है और जब सृजनकर्ता की शोषित हो तो सृष्टि का विकास कैसे संभव है।

स्वामी विवेकानंद भी यह मानते हैं कि स्त्रियों की प्रगति में ही किसी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव है। उन्होंने इस संबंध में शिकागो सभा में कहा था - " किसी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है। वहां की महिलाओं के साथ होने वाला व्यवहार हैं।" "नारी जब अपने ऊपर थोपी गई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी। तो विश्व की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती।"१९

आज संपूर्ण विश्व में स्त्री जागरुक हो चुकी है। उसके विकास के महत्व को सभी जगह तथा सभी क्षेत्रों में सराहा जाने लगा है। स्त्रियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार तथा सांस्कृतिक विकास के संबंध में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने विचार व्यक्त किए हैं - "लोगों में जागृति लाने के लिए हमें पहले स्त्रियों को जागृत करना होगा स्त्रियों के आगे बढ़ने से परिवार आगे बढ़ेगा, गांव आगे बढ़ेगा और राष्ट्र भी आगे बढ़ेगा।"२०

स्त्री शोषण के साथ ही स्त्री जागरण की भावाभिव्यक्ति मैत्रेयी य ने बखूबी अपनी लेखनी से की है फिर वह झूलानट की शीलो हो या अल्मा कबूतरी की अल्मा या कदम बाई अथवा इदन्नमम की कुसुमा हो या चाक कि सारंग नैनी। इन सभी नारी पात्रों ने स्वयं के लिए शोषण के पश्चात स्वतंत्रता के मापदंड निर्धारित किए तथा अपना जीवन अपनी ही शैली में जीने का प्रयास किया। इस प्रकार मैत्रेयी की रचनाओं में बखूबी स्त्री शोषण तथा स्त्री जागरण का वर्णन हमें मिलता है। बेतवा बहती रही उपन्यास की मुख्य पात्र उर्वशी का लघु जीवन बहुत कष्टमय बीतता है अपने भाई के अत्याचारों के कारण उसे अपनी बहन की सहेली मीरा के पिताजी बरजोर सिंह के साथ बछिया होने के लिए विवश होना पड़ता है किंतु धीरे-धीरे उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आता है वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती हैं उर्वशी अपने साथ हुए अन्याय को किसी अन्य स्त्री के साथ घटित होने देना नहीं चाहती। यही कारण है कि वह उदय की शादी तय हो जाने के बावजूद उसे विजय की विधवा बहू के साथ विवाह करने राजी करती है और बरजोर सिंह के लाख धमकाने के बाद भी अपने निर्णय से हटती नहीं है वह बरजोर सिंह से कहती है - "कह लई सब? तुम हमें काहे के लाने लाए, सो हमें जानने की जरूरत नहीं है। बस, तुम इतनी सुन लो की हम काहे के लाने आए हैं -अन्याय हम नहीं होने देंगे -------- उदय की शादी के लिए जो लोग आए हैं, पैसा वाले हैं अपनी बिटिया के लिए आसानी से उदय जैसा वर खोज लेंगे। ---------- लेकिन हमारे विजय की बहू --------- कहां जाएगी वह कौन ब्याहने आएगा उसे? तुमने कब हूं सोची जे बात? कैसे कटेगी उसकी जिंदगानी - - -? बेटा नहीं रहो तो बहू बिरानी हो गई ? धक्का मारदऔ बाय? हमारे रहते जा अनरथ नहीं हो सकत----------१ से १००० तक नहीं: ----------अब हम नहीं चाहते कि वह भी कहीं हमारी तरह ही--------- "उर्वशी का जवाब सुनकर भाई मैं भी अपने पुत्र

की गलतियों का विरोध करने कीहिम्मत आ जाती - " लला काऊ को तो आगे आने ही पड़ है।" २१

झूलानट उपन्यास की नायिका शीलो कथा के प्रारंभ में अबला नारी के रूप में सामने आती है किंतु धीरे-धीरे उसके व्यक्तित्व में असाधारण परिवर्तन होता है। सर्वप्रथम अपने पति को मनाने के लिए किए गए उपाय असफल होने पर वह निर्णय करती है कि उसे पाने का प्रयास नहीं करेगी - "को - क्रोध की ऐसी भंगिमा पहली बार अख्तियार की है उन्होंने। बांह का गंडा तोड़कर फेंक दिया। सरजू की दी हुई शीशियां अम्मा द्वारा मंगाई श्रृंगार सामग्री घर के पनारे पर फोड़ डाली।"२२

अल्मा कबूतरी उपन्यास में मैत्रेयी य ने आनंदी के माध्यम से परिवार में जागृत स्त्री का चित्रण किया है मैत्रेयी य ने अनेक दृष्टिकोणों के माध्यम से विजन उपन्यास में नारी जागरण का स्वर मुखरित किया है। नेहा की मां आभा से चढ़ती है और नेहा को उस से बचा कर रखना चाहती है। आभा का ब्याह नहीं फला तो वे उसके वजूद को भी स्वीकार नहीं करती तब नेहा विचार करती है - "सुंदर गृहस्थी चलाने वाली लड़की ही सुपात्र होती है, अब यह परिभाषा बदलनी चाहिए क्योंकि यह चलने वाली नहीं।"२३

मैत्रेयी य कि नारी पात्र आधुनिकता का आवरण ओढ़े हुए हैं। इन नारी पात्रों के आत्मविश्वास में एक खुलापन एवं उन्मुक्तता झलकती है। रजऊ के व्यक्तित्व एवं व्यवहार में भी उसमें कहीं भी संकोच या संकीर्णता नहीं है वह अपनी सास को मना कर देती है कि वो किसी बछिया नहीं करेगी (बछिया बुंदेलखंड की वह प्रथा है जिसमें कोई स्त्री बछिया दान कर, पर पुरुष के साथ स्थाई रूप से पत्नी की भांति रहने लगती है) "हम बताएं देते हैं कि जा गांव में हमारे मनमाफिक ऐसा कोई नहीं है जिसका लड़का हम पैदा करें सुन लो तुम भी, जान रहे हैं कि यह राछरे फजीहत काय के लाने हो रही है बच्चा नहीं है हम।"२४

मैत्रेयी अपने उपन्यासों के समस्त नारी पात्रों के माध्यम से वर्षों से चली आ रही सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा को तोड़ा है और नारी जागरण का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। अलमा भी अपनी जनजाति के कबीले मैं जा कर राजनीति के उच्च पद पर आसीन होकर अपने ही जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, परंपराओं एवं अंधविश्वासों को तोड़कर उसमें नए विचारों एवं उसके स्तर को सुधारना चाहती है वह अपने बप्पा की हत्या का बदला भी लेना चाहती है। अल्मा कबूतरी उपन्यास की नायिकाओं में नारी चेतना एवं नवीन विचारों का स्पष्ट आभास होता है मैत्रेयी य के उपन्यासों में आए स्त्री पात्र समाज के प्रत्येक वर्ग से संघर्ष करते हैं, एवं अपने विचारों की नवीनता प्रदान करते हुए समाज में चेतना जागृत करने की पूर्ण कोशिश करते हैं।

संदर्भ सूची

1. मानव विकार रिपोर्ट : मौर्य राशि एवं नूपुर कुकरेती द्वारा संकलित एवं "संपादित सुरक्षा के दायरे" भाग-1 प्रकाशक (सहयोगिनी ट्रस्ट छतरपुर 1900 अलिखित)
2. सुशीला अग्रवाल : स्टेट्स ऑफ वीमेन
3. डॉ. एल .पी .शर्मा : प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम संस्करण 1986
4. सत्यकेतु विद्यालंकार : प्राचीन भारत का इतिहास 1987
5. डॉ एल .पी .शर्मा : मध्यकालीन भारत
6. मैत्रीय पुष्पा: विजन पृष्ठ संख्या 74-75, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2001
7. मैत्रीय पुष्पा : झूलानट पृष्ठ संख्या 80, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 1999
8. मैत्रीय पुष्पा विजन पृष्ठ संख्या 13, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2001
9. मैत्रीय पुष्पा: अल्मा कबूतरी कब संख्या 205, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2000 - 2001
10. मैत्रीय पुष्पा: अल्मा कबूतरी पृष्ठ संख्या 244, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2000 – 2001
11. मैत्रीय पुष्पा: अल्मा कबूतरी पृष्ठ संख्या 307, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2000 - 2001
12. मैत्रीय पुष्पा: कहीं ईसुरी फाग पृष्ठ संख्या 48, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2004
13. मैत्रीय पुष्पा : कहीं ईसुरी फाग पृष्ठ संख्या 80, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2004
14. मैत्रीय पुष्पा: कही ईसुरी फाग पृष्ठ संख्या 205, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2004
15. मैत्रीय पुष्पा : अगनपाखी पृष्ठ संख्या 36, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2001
16. मैत्रीय पुष्पा: कस्तूरी कुंडल बसई पृष्ठ संख्या 37, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,सन 2002
17. मैत्रीय पुष्पा झूलानट पृष्ठ संख्या 37, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 1999
18. मैत्रीय पुष्पा: झूलानट पृष्ठ संख्या 44-45, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 1999
19. अखंड ज्योति, दिसंबर 2002 पृष्ठ 23
20. सी. एच. जैन: "महिला सशक्तिकरण" अप्रकाशित पुस्तक
21. मैत्रीय पुष्पा: बेतवा बहती रही पृष्ठ संख्या 62, किताब घर दिल्ली, सन 2006
22. मैत्रीय पुष्पा: झूलानट पृष्ठ संख्या 62, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 1999
23. मैत्रीय पुष्पा: विजन पृष्ठ संख्या 122, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2001
24. मैत्रीय पुष्पा: कही हो गए ईसुरी फाग पृष्ठ संख्या 194, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सन 2004